विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 28 : नई दिल्ली : 5-11 अक्टूबर 2018

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी चेन्नई में सानंद सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। संवत्सरी के बाद देश-विदेश के हजारों श्रद्धालु पूज्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुए। लोगों की अत्यधिक भीड़ के कारण आवास व्यवस्था समिति द्वारा की गई विराट व्यवस्थाएं भी बौनी ही सिद्ध हुईं। पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में चेन्नई में पैंतालीस से ज्यादा मासखमण अथवा उससे अधिक दिनों की तपस्याएं सम्पन्न हो चुकी हैं। अब भी अनेक लोग उस दिशा में बढ़ रहे हैं। यदा-कदा होने वाली वर्षा के बीच मौसम इन दिनों गर्म मिजाज धारण किए हुए है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण चेन्नई में

स्पर्श में हो विवेक और संयम

२३ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन शृंखला के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा--''ठाणं' आगम में सृष्टि संबंधी कई व्यवस्थाएं, कई स्थितियां सूक्ष्मता से विवेचित की गई हैं। देव जगत् पर भी प्रकाश डाला गया है। जहां एक ओर देवों के आयुष्य के विषय में बताया गया है, वहीं दूसरी ओर मानों उनकी मनोवैज्ञानिक स्थिति का भी चित्रण किया है। ज्यों-ज्यों देवता ऊपर की स्थिति में होते हैं, उनकी महानता भी विशेष होती है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। जैसे मनुष्यों में अधम, मध्यम और उत्तम--तीनों प्रकार के व्यक्ति होते हैं, इसी प्रकार देवों में भी तारतम्य होता है। कई देवता तो इतने निर्मल होते हैं कि किसी दृष्टि से मानों कि उनमें साधुता होती है। अनुत्तर विमान के देवों में तो कितनी निर्मलता होती है। तीसरे और चौथे देवलोक अर्थात् सनत्कुमार और माहेन्द्र के देव देवी के स्पर्श मात्र से अपनी वासनापूर्ति कर लेते हैं, ऐसा 'ठाणं' आगम में बताया गया है।

स्पर्श एक ऐसा तत्त्व है, जिसके माध्यम से अच्छा कार्य भी हो सकता है तो गलत कार्य भी किया जा सकता है। स्पर्श के द्वारा चिकित्सा की विधि भी रही है। छोटे अपने मस्तक से बड़ों के चरण आदि का स्पर्श करते हैं तो बड़े अपने हाथों से छोटों के मस्तक आदि का स्पर्श करते हैं। स्पर्श अपने आप में विज्ञान है। स्पर्श कितना करना और कितना नहीं करना, यह एक विवेक व संयम की बात है। अपने शरीर का भी स्पर्श नहीं करना तो एक उच्च कोटि की साधना हो जाती है।

साधु के लिए कहा गया कि उसे अपनी संसारपक्षीया सगी मां, बहन और बेटी के साथ भी एक आसन पर नहीं बैठना चाहिए। साधु की साधना में उपादान तो ठीक रहना चाहिए ही, उसे निमित्त से बचने का भी प्रयास करना चाहिए। साधना की एक स्थिति यह भी बन सकती है कि निमित्तों का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता, किन्तु साधना की सामान्य भूमिका में निमित्त भी अपना प्रभाव डाल सकते हैं।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'यदि प्रतिक्रमण का अर्थ याद हो तो प्रतिक्रमण भी एक सुन्दर अनुष्ठान है। नींद आदि के कारण प्रतिक्रमण को छोड़ देना तो एक प्रकार की हानि होती है। प्रतिक्रमण की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यह तो शुद्धि का एक साधन है।'

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को पावन संबोध प्रदान किया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश तेरापंथ के इतिहास के कतिपय प्रसंगों का सरसशैली में वर्णन किया।

'रायपसेणियं' आगम का लोकार्पण

कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर के समक्ष जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री अरविन्द संचेती आदि ने 'रायपसेणियं' आगम का लोकार्पण किया। परम पूज्य आचार्य तुलसी के वाचना प्रमुखत्व तथा परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी व परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रधान संपादकत्व में इस आगम के अनुवादक साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी तथा संपादक-विवेचक साध्वी जिनप्रभाजी हैं।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--''रायपसेणियं' आगम बारह उपांगों में एक है। इसमें राजा प्रदेशी का प्रसंग उपलब्ध है। वह एक नास्तिक राजा था। कुमारश्रमणकेशी जैसे महान संत के साथ उसका वार्तालाप हुआ, तर्क-वितर्क हुए। उसके बाद वह झुका और कुमारश्रमणकेशी की बात से सहमत हुआ। आखिर वह राजा धार्मिक बना, उसने व्रतों को स्वीकार किया और मरकर देवगति में उत्पन्न हुआ। यह कथानक विस्तारपूर्वक इस आगम में दिया गया है। आस्तिकवाद और नास्तिकवाद को समझने की दृष्टि से यह एक अच्छा आगम है। हमारे धर्मसंघ में आगमों के वाचना प्रमुख आचार्य तुलसी हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी प्रधान संपादक हैं। मैंने भी इसमें कार्य किया है। जैन विश्व भारती की ओर से इस आगम का लोकार्पण हुआ है।'

ग्रंथ की संपादक-विवेचक साध्वी जिनप्रभाजी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

सदुपयोग हो आंखों का

२४ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'जैन आगमों में विभिन्न विषय में वर्णित हुए हैं। जो चीजें हमारे लिए अप्रत्यक्ष हैं, उनके विषय में भी आगमों में उल्लेख प्राप्त होता है। देवगति हमारे लिए अदृश्य है, फिर भी उसके विषय में वर्णन आगम साहित्य में प्राप्त होता है।

'ठाणं' आगम के दूसरे स्थान में कहा गया है कि बारह देवलोक में पांचवें और छठे अर्थात् 'ब्रह्मलोक' व 'लान्तक' के देव देवी के रूप को देखने मात्र से ही वासनापूर्ति कर लेते हैं। आंख का विषय है रूप। हमारी पांच इन्द्रियों में चक्षु ऐसी इन्द्रिय है, जिसके द्वारा रूप को देखा जाता है। यह अप्राप्यकारी है। यह दूर से अपने विषय का ग्रहण कर लेती है। चक्षुशक्ति के द्वारा कितनी दूर की चीजों को देखा जा सकता है। ध्यातव्य यह है कि आदमी आंखों का क्या उपयोग करता है। चक्षु का दुरुपयोग भी किया जा सकता है तो सदुपयोग भी किया जा सकता है।

अनिमेष प्रेक्षा (त्राटक) करना आंखों का सदुपयोग हो सकता है। ध्यान साधना में आंखों का उपयोग करना आंखों का बहुत अच्छा उपयोग होता है। सत्साहित्य के पठन, लेखन आदि में आंखों का उपयोग करना उनका सदुपयोग होता है। तीर्थंकर, गुरु आदि का चित्र देखने से मन में श्रद्धा, विनय का भाव प्रसूत हो सकता है। इस प्रकार चित्र एक निमित्त बन सकता है। चित्र के निमित्त से चरित्र का निर्माण हो सकता है। इसीलिए साधु के लिए निषेध है कि साधु ऐसा चित्र न देखे, जिससे उसके भीतर वासनात्मक भाव उभरें। देखने से करुणा का भाव भी उभर सकता है और कामात्मक भाव भी उभर सकता है। आदमी की आंखों से पवित्र भावनाएं उभरती रहें, यह काम्य है।'

अणुव्रतसेवी, शासनसेवी, आत्मस्थ मोहनभाई जैन पर आधारित ग्रंथ का लोकार्पण

कार्यक्रम में परम पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में अणुव्रत विश्व भारती द्वारा स्व. मोहनभाई के व्यक्तित्व और कर्तृत्त्व पर आधारित ग्रंथ 'कर्मयोगी की सृजन यात्रा' के लोकार्पण का उपक्रम रहा।

इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'मोहनभाई एक बहुत साधारण व्यक्ति थे, लेकिन उन्होंने अपने जीवन में साधारण कामों को भी असाधारण ढंग से किया, जिससे मोहनभाई

का व्यक्तित्व भी समाज के सामने उजागर हुआ और एक समय ऐसा आया, जब उन्हें अणुव्रत पुरस्कार से नवाजा गया। वे एक कार्यकर्ता थे। मोहनभाई जैन अणुव्रत कार्यक्रम से जुड़े। उन्होंने संस्कार निर्माण समिति के माध्यम से लंबे समय तक काम किया। आचार्यश्री तुलसी की यात्राओं में भी वे कई बार साथ रहे और छोटे-छोटे गांवों में संस्कार निर्माण की प्रदर्शनी दिखाते, जिससे लोगों को अणुव्रत के अनुरूप जीवन जीने की प्रेरणा मिलती। वे नशामुक्ति कार्यक्रम के साथ जुड़े। जब कभी व्यापक रूप से नशामुक्ति के लिए आंदोलन चलाया गया, मोहनजी अणुव्रत कार्यकर्ता के रूप में आगे रहे।

मोहनभाई ऐसे कार्यकर्ता थे, जिनके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव भी आए। कभी-कभी वे अपने कार्य क्षेत्र से निराश भी हुए, लेकिन निराशा के क्षणों में उन्हें आचार्य तुलसी से बल मिला। इस प्रकार मोहनजी में अपने काम की धुन थी। वे अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध हो जाते थे। वे सौभाग्यशाली थे कि उन्हें चार-चार आचार्यों के दर्शन, उपासना करने और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करने का मौका मिला। उन्होंने अपने जीवन में अनेक काम किए। अपने परिवार को भी उन्होंने इस दृष्टि से संघ से जोड़कर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके पुत्र आज भी कार्य कर रहे हैं। वे परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में अपना कार्य करते रहें। अणुव्रत को देश ही नहीं, विदेशों में भी पहुंचाने में अणुव्रत विश्व भारती का भी योगदान रहा है। यह क्रम उत्तरोत्तर बढ़ता रहे। मोहनभाई के जीवन के बारे में जो ग्रंथ प्रकाशित हुआ है, उससे अणुव्रत के कार्यकर्ता विशेष प्रेरणा प्राप्त करते रहें।'

'कर्मयोगी की सृजन यात्रा' ग्रंथ कार्यक्रम के अतिथियों, अणुविभा के कार्यकर्ताओं और स्व. मोहनभाई के परिजनों ने पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया।

अणुविभा के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय विभाग के संयोजक श्री सोहनलाल गांधी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित 'राजस्थान पत्रिका' के प्रधान संपादक श्री गुलाब कोठारी ने कहा--'मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मुझे एक कर्मयोगी के कार्यक्रम में उपस्थित होने का सुअवसर मिला है। मोहनभाई में कुछ ऐसा नहीं था, जो हम सभी में नहीं है। फर्क इतना है कि उन्होंने अपने जीवन में बहुत बड़ा लक्ष्य निर्धारित किया था, उसके प्रति वे संकल्पित थे। उन्होंने उसे करके भी दिखाया। वे रुके नहीं और कष्टों से हारे भी नहीं। जिसको देना आता है, समाज उसी को याद करता है। मोहनभाई के जीवन से हम सभी श्रावक-श्राविकाएं प्रेरणा लें और वैसा बनने के लिए अपने आराध्य आचार्यप्रवर का आशीर्वाद और कृपा प्राप्त करने का प्रयास करें।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'आदमी जन्म लेता है, जीवन जीता है और एक दिन विदा हो जाता है। यह दुनिया का सामान्य-सा क्रम है। जन्म लेना और मरना तो सबके साथ घटित होता है, किन्तु आदमी कैसे जीता है और जीवन में क्या करता है, यह महत्त्वपूर्ण बात होती है। श्री मोहनभाई के जीवन में कर्मठता का दर्शन किया जा सकता था। अणुव्रत विश्व भारती के बालोदय के संदर्भ में तो संभवतः उनका विशिष्ट योगदान रहा है।

मुझे स्मरण हो रहा है कि जब वरदासर में अणुव्रत अधिवेशन का कार्यक्रम हुआ था, तब गुरुदेव तुलसी भी वहां पधारे थे। मैं तब बच्चा था, मैं भी वहां गया था। यात्रियों के लिए छोटे-छोटे तंबू बनाए गए थे। उन दिनों भारतीय संस्कार निर्माण समिति भी चलती थी। सन् १९७५ में श्रीडूंगरगढ़ में मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह से पहले उसी पंडाल में भारतीय संस्कार निर्माण समिति के तत्त्वावधान में हरिजनों का सम्मेलन हुआ था। गुरुदेव तुलसी भी उस कार्यक्रम में पधारे थे।

मोहनभाई पर 'कर्मयोगी की सृजन यात्रा' ग्रंथ आया है। उनके जन्म के सौ वर्षों का संदर्भ भी जुड़ा हुआ है। उनके जीवन से न केवल उनके परिजनों को, अपितु समाज के अन्य लोगों को भी कर्मठता आदि गुणों को आत्मसात् करने की प्रेरणा मिलती रहे।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज के कार्यक्रम में गुलाबजी कोठारी का भी आना हो गया। उनके पास 'राजस्थान पत्रिका' के रूप में एक हथियार है। इस हथियार से वे अनैतिकता और भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों को समाप्त करने का प्रयास करते रहें। देश में नैतिकता का भाव रहे, इस संदर्भ में इस हथियार का अच्छा उपयोग होता रहे।'

दो व्यक्तित्वों को मरणोपरान्त 'समाज भूषण' अलंकरण से अलंकृत करने की घोषणा

आज के कार्यक्रम में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा की ओर से महासभा के पंच मंडल सदस्य श्री अमरचंद लूंकड़ ने स्व. मोहनभाई जैन (सरदारशहर) तथा स्व. विशनदयालजी गोयल (हांसी-कोलकाता) को 'समाज भूषण' अलंकरण समर्पित करने की घोषणा की। महासभा द्वारा यह अलंकरण परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में कोयम्बत्तूर मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत ११ फरवरी २०१९ को प्रदान किया जाएगा।

पदारोहण दिवस पर कालूगणी का सश्रद्धा स्मरण

२५ सितम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'परम पूज्य कालूगणी युवावस्था में आचार्य बने। करीब तैंतीस वर्ष की अवस्था में धर्मसंघ के संचालन का दायित्व उन्होंने ग्रहण किया था। जहां एक आचार्य होते हों, उस बड़े समुदाय के आचार्य पद पर आरूढ़ होना एक गरिमापूर्ण और अतिविशिष्ट बात होती है। आचार्यश्री कालूगणी आज के दिन लाडनूं में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के आचार्य पद पर विधिवत आरूढ़ हुए थे। परम पूज्य डालगणी का भाद्रव शुक्ला द्वादशी को महाप्रयाण हुआ, उस समय कोई प्रकट रूप में युवाचार्य नहीं थे। बस जो नाम था, वह डालगणी के द्वारा पत्र में अंकित कर भीतर में रखा हुआ था। उस पत्र के आधार पर यह निर्णय किया गया कि मुनिश्री कालूजी (छापर) तेरापंथ धर्मसंघ के आठवें आचार्य हैं। इस प्रकार कालूगणी की अप्रकट रूप में नियुक्ति हुई थी।

गणी अर्थात् आचार्य के पास आठ संपदाएं होनी चाहिए--

१. आचार संपदा--आचार्य में आचार की संपदा होनी चाहिए। संयम की समृद्धि होनी चाहिए। उनका आचार निर्मल रहना चाहिए। उनकी महाव्रतों की आराधना, समिति-गुप्ति की साधना अच्छे रूप में होनी चाहिए। क्योंकि उनका आचार उच्च कोटि का होता है तो औरों को भी प्रेरणा मिल सकती है।

२. श्रुत संपदा--आचार्य में शास्त्र आदि का ज्ञान अर्थात् बहुश्रुतता होनी चाहिए। दूसरों को कुछ बता सकें, कुछ ज्ञान दे सकें, ऐसी क्षमता आचार्य में होनी चाहिए।

३. शरीर संपदा--आचार्य का शरीर सुडौल, सुगठित और स्वस्थ होना चाहिए। उनमें शारीरिक सक्षमता भी होनी चाहिए।

४. वचन संपदा--आचार्य में आदेय वचनता होनी चाहिए अर्थात् वे जो बात कह दें, सामान्यतया लोग सम्मान के साथ उसे मान लें। वचन में मधुरता और विशिष्टता भी होनी चाहिए। प्रवचन भी अच्छे रूप में कर सकें, यह क्षमता भी आचार्य में होनी चाहिए।

५. वाचना संपदा--अपने शिष्यों आदि को वाचना दे सकें, कोई ग्रंथ पढ़ा सकें, ऐसी क्षमता आचार्य में होनी चाहिए। उनमें अध्यापन कौशल भी होना चाहिए। आचार्यप्रवर से पढ़ने का विशेष महत्त्व होता है।

६. मति संपदा--आचार्य में बुद्धिमत्ता, बुद्धि कौशल होना चाहिए। किस समय क्या करना, यह विवेक आचार्य में होना चाहिए। वे स्वयं अपनी बुद्धि से कार्य कर सकें, ऐसी क्षमता आचार्य में होनी चाहिए। स्वयं की बुद्धि है तो ज्ञान ग्रहण और प्रवचन कुछ अच्छे रूप में हो सकता है।

७. प्रयोग संपदा--आचार्य में वाद कौशल होना चाहिए। शास्त्रार्थ में अपनी तार्किकता से दूसरे की गलत बात

को खंडित करते हुए अपनी सही बात को सिद्ध कर सकें तथा गलत बोलने वाले को शास्त्रार्थ के द्वारा निरुत्तर कर सकें, यह क्षमता आचार्य में होनी चाहिए।

८. संग्रह परिज्ञा संपदा--आचार्य में संघ व्यवस्था का कौशल भी होना चाहिए। आचार्य पर संघ का जिम्मा होता है। धर्मसंघ की सुव्यवस्था की निपुणता आचार्य में होनी चाहिए। यह आचार्य की बड़ी संपदा होती है।

इन आठ संपदाओं के आलोक में परम पूज्य कालूगणी को देखा जा सकता है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ रूपी महाग्रंथ का आठवां अध्याय उनके नाम हो गया। आज भाद्रवी पूर्णिमा के अवसर पर मैं उन्हें बार-बार श्रद्धा के साथ वंदन करता हूं।'

आचार्यप्रवर ने कालूगणी के जन्म, महाप्रयाण तथा उनके द्वारा अपने उत्तराधिकारी के मनोनयन आदि प्रसंगों का रोचक शैली में वर्णन किया।

डॉ. प्रवीण भण्डारी ने अपने आस्थासिक्त विचार व्यक्त किए।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह : सांप्रदायिक सौहार्द दिवस

२६ सितम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज से अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का शुभारम्भ हुआ। सप्ताह का प्रथम दिन 'सांप्रदायिक सौहार्द दिवस' के रूप में समायोज्य था। इसलिए आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में अणुव्रत समिति-चेन्नई द्वारा सर्वधर्म सम्मेलन की आयोजना की गई। अणुव्रत समिति-चेन्नई के अध्यक्ष श्री सुरेश बोहरा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

मुस्लिम समुदाय की ओर से अहमदिया मुस्लिम जमात के मौलवी रफीक अहमद साहिब, बहाई धर्म की ओर से नीलिमा पूनीथन और सिख समाज की ओर से गुरुद्वारा गुरुनानक सत्संग सभा के हेड ग्रंथी ज्ञानी प्रतिपाल सिंह ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

प्रजापति ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ब्रह्मकुमारी बहन नीलिमाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'तेरापंथ के रूप में सुन्दर संगठन पूरे विश्व को शांति के पथ पर ले जाने वाला है। इस धर्म के विचारों को यदि मान लिया जाए तो पूरा विश्व ही सुन्दर बन सकता है। अणुव्रत और तेरापंथ में ब्रह्मकुमारी के योग का सारा सार आता है। मैं तेरापंथ धर्मसंघ का बहुत-बहुत अभिवादन करती हूं और आशा करती हूं कि यह सुन्दर संगठन दुनिया में ऐसी क्रांति लाएगा कि सारे धर्म मिलकर एक हो जाएंगे और चारों ओर शांति तथा सौहार्द का वातावरण छा जाएगा।'

आई.डी.सी.आर. चैनल के डायरेक्टर व ईसाई धर्म के रेव फादर मारिया अरुलराजा ने अपने अभिभाषण में कहा--'मैं ऐसे महान संत आचार्यश्री महाश्रमणजी से बहुत प्रभावित हूं, जो अपने उत्तम विचारों के साथ इस दक्षिण धरती पर पधारे हैं। मुझे नहीं पता कि आपका पुनः आगमन कब होगा, लेकिन यह कहना चाहूंगा कि आप बार-बार यहां आएं और यहां की जनता को करुणा का पाठ पढ़ाएं। आचार्यश्री अहिंसा का प्रचार कर लोगों का कल्याण कर रहे हैं।'

जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक आम्नाय के आचार्य जयंतसेनसूरिजी के शिष्य संयमरत्न विजयजी ने कहा--'आचार्य भगवंत के पास चुम्बकीय शक्ति है, इस कारण हर कोई आपके पास खींचा चला आता है। काफी समय से मेरी भी इच्छा थी कि मैं आपके दर्शन करूं। आज मैं बस इसीलिए करीब नौ किलोमीटर दूर साहूकारपेट से चलकर आया हूं। आचार्यश्री के दर्शन से मुझे जो शांति की अनुभूति हुई है, उसे मैं शब्दों में बता नहीं सकता। आपके समवसरण और आपके आभामंडल में जो आता है, वह निश्चित ही सुकून को प्राप्त करता है। उन्होंने गीत के द्वारा आचार्यश्री की अभ्यर्थना की। उस गीत की प्रथम दो पंक्तियां इस प्रकार थीं--

बड़ी दूर से चलकर आया हूं गुरुवर मैं, दर्शन के लिए,
दो भावों के पुष्प लाया हूं गुरुवर मैं चरणों के लिए।

अणुव्रत अनुशास्ता परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज से एक सप्ताह का अणुव्रत आधारित कार्यक्रम शुरू हुआ है, जिसे अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के नाम से जाना जा सकता है। अणुव्रत दो शब्दों के योग से बना हुआ एक शब्द है। अणु अर्थात् छोटा, व्रत अर्थात् संयम। छोटे-छोटे नियमों की आचार संहिता अणुव्रत है। महाव्रत अर्थात् बड़े नियम। सर्वप्राणातिपात विरमण, सर्वमृषावाद विरमण, सर्वअदत्तादान विरमण, सर्वमैथुन विरमण और सर्वपरिग्रह विरमण--ये पांच महाव्रत हैं। इन पांच महाव्रतों को जिंदगी भर के लिए स्वीकार करने वाले साधु होते हैं। अधिकांश लोगों के लिए इन बड़े-बड़े नियमों को स्वीकार करना कठिन हो सकता है। इसलिए जो गृहस्थ महाव्रतों को स्वीकार नहीं कर सकते, उनके लिए अणुव्रतों के रूप में छोटे-छोटे नियम प्रस्तुत किए गए। अणुव्रतों से कुछ अंशों में स्वयं का स्वयं पर अनुशासन सध सकता है।

आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का अवदान दिया। उसे किसी भी जाति, क्षेत्र, संप्रदाय आदि का व्यक्ति स्वीकार कर सकता है। यहां तक कि नास्तिक व्यक्ति भी अणुव्रतों का पालन कर सकता है। अणुव्रत की आत्मा है--संयम। जीवन की हर क्रिया में संयम रहना चाहिए। मानव अच्छा मानव बने, यह अणुव्रत का संदेश है। व्यक्ति अच्छा बनेगा तो समाज अच्छा बन जाएगा और समाज अच्छा होगा तो राष्ट्र अच्छा बन जाएगा।

आज से अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का प्रारम्भ हुआ है। प्रथम दिन साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस के रूप में स्थापित है। भारत में विभिन्न धर्म-संप्रदाय हैं। विभिन्न धर्म-संप्रदायों से जुड़े लोग परस्पर सौहार्द रखें। अपनी-अपनी मान्यताएं हो सकती हैं, अपने-अपने संत, महंत, पंथ और ग्रंथ हो सकते हैं, अलग-अलग होने पर भी आखिर हम सब आत्मा हैं। हम सबमें आपसी सौहार्द रहे। एक-दूसरे की अच्छी और सच्ची बातों का सम्मान होना चाहिए। हमारा मतभेद हो सकता है, विचारभेद हो सकता है, सिद्धांत भेद हो सकता है, ग्रंथ भेद हो सकता है, संप्रदाय भेद हो सकता है, पर मनभेद न हो। हम अपने मन में सबके प्रति उचित अनाशातना का भाव रखें, यह काम्य है।'

आज के इस समारोह में विभिन्न महानुभाव उपस्थित हैं। उनसे हमारा मिलना हुआ है। हम सभी अहिंसा, सत्य आदि धर्मों की आराधना करते रहें तथा अपने-अपने अनुयायियों को उस पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देते रहें तो समाज और राष्ट्र अच्छा बन सकेगा।'

अणुव्रत समिति-चेन्नई के मंत्री श्री जितेन्द्र समदड़िया ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

श्री प्रवीण सुराणा ने पूज्यप्रवर से ३० दिन तथा श्री श्रेयांश भरसारिया ने २७ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज से अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में द्विदिवसीय जैन संस्कार विधि कार्यशाला प्रारम्भ हुई, जिसमें २८ क्षेत्रों के ५२ व्यक्ति संभागी बने। कार्यशाला के प्रारम्भ में संभागियों को परम पूज्य आचार्यप्रवर का मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ। विभिन्न सत्रों में मुनि दिनेशकुमारजी, अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। वरिष्ठ उपासक श्री डालमचंद नौलखा, श्री बजरंग जैन तथा श्री महेन्द्र सेठिया के भी वक्तव्य हुए। कार्यशाला में जैन संस्कारकों की विभिन्न श्रेणियों के निर्माण और तदुनुरूप परीक्षा के उपरान्त चयन का उपक्रम भी रहा।

बोलने से पहले हो विवेचन

२७ सितम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में बोलने से पूर्व विवेचन की प्रेरणा प्रदान की।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का दूसरा दिन जीवन-विज्ञान दिवस के रूप में आयोजित हुआ। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त जीवन-विज्ञान के संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान की।

सुमन रहे मन

२८ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'देव जगत में बारह देवलोकों की एक व्यवस्था है। संपूर्ण देव जगत में चौसठ इन्द्र होते हैं। उनमें बीस भवनपति के, बत्तीस व्यंतर जाति के, पहले से लेकर आठवें देवलोक तक प्रत्येक में एक-एक, नवें व दसवें देवलोक दोनों में एक ग्यारहवें व बारहवें दोनों में एक तथा ज्योतिष्क में दो इन्द्र होते हैं। इस प्रकार कुल चौसठ इन्द्र होते हैं। ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान में इन्द्र की कोई व्यवस्था नहीं होती। वहां प्रत्येक देव अहमिन्द्र होता है।

ठाणं में कहा गया है--'दो इन्द्र मनः परिचारक (संकल्प मात्र से वासनापूर्ति करने वाले) होते हैं--प्राणत और अच्युत। मन संज्ञी मनुष्यों, संज्ञी तिर्यंचों, नारकों और देवों में भी होता है। मन के द्वारा स्मृति, चिंतन और कल्पना की जाती है। मन दुर्मन न बने, वह सुमन बना रहे, यह काम्य है। मन चंचल भी है। कितने-कितने विचार मन में आते हैं। हम अपने मन में वीतरागता को स्थापित कर लें तो मन निर्मल हो सकता है तथा मन की निर्मलता से आनंद, सुख और शांति प्राप्त हो सकती है। वीतराग प्रभु को मन में बिठाने से मन पवित्र बन सकता है। नमस्कार महामंत्र के जप से भी मन में निर्मल भाव उभर सकते हैं। मन की निर्मलतायुक्त एकाग्रता रहती है तो आदमी अनेक पापों से बच सकता है, अच्छा कार्य कर सकता है और अपने मन को सुवासित रख सकता है।'

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का तीसरा दिन, अणुव्रत प्रेरणा दिवस का आयोजन। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'अणुव्रत छोटे-छोटे नियमों की आचार संहिता है। छोटे-छोटे अच्छे नियम जीवन भर के लिए जीवन में आ जाते हैं तो जीवन उन्नत बन सकता है। संकल्पों में शक्ति होती है, उनसे सुरक्षा हो सकती है। जो शुभ संकल्प जिंदगीभर के लिए लिया जाता है और जिसे निष्ठा के साथ निभाया जाता है, वह संकल्प भले छोटा ही क्यों न हो महत्त्वपूर्ण हो जाता है। आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि उसके भोजन में अशाकाहार का मिश्रण न हो। भले वह देश में रहे या विदेश में, किसी होटल में जाए या और कहीं जाए, यह ध्यान रखे कि उसके भोजन में अशाकाहार का मिश्रण न हो। दवाई भी लेनी हो तो भी यह ध्यान दिया जाए कि उसमें अशाकाहार का मिश्रण तो नहीं है ना? इसी प्रकार शराब से भी आदमी को बचना चाहिए। कई लोग प्रतिदिन शराब नहीं पीते, किन्तु शादी, व्यावसायिक मीटिंग आदि में भी शराब का सेवन नहीं होना चाहिए। कोई मनुहार करे तो भी शराब को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

आदमी को जीवन में हर जगह समझौता नहीं करना चाहिए। अच्छे नियमों के पालन में समझौता नहीं करना चाहिए। शराब, मांस, अंडे का सेवन नहीं करना है तो नहीं ही करना है। इसी प्रकार नमस्कार महामंत्र की माला फेरने आदि के संकल्प में भी दृढ़ता रहनी चाहिए। अणुव्रत प्रेरणा दिवस के संदर्भ में आप लोग अणुव्रत की प्रेरणा स्वयं ग्रहण कर दूसरे को भी यथासंभव प्रेरित करने का प्रयास करें, यह वांछनीय है।'

कार्यक्रम के दौरान श्रीमती निर्मला बाफना ने पूज्यप्रवर से ३१ दिन तथा श्रीमती सुमन चोरड़िया ने २७ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

पुरस्कार अर्पण समारोह

आज के कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा पुरस्कार प्रदान करने का उपक्रम भी रहा। इस उपक्रम के अंतर्गत आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार श्री इन्द्र बैंगानी (लाडनूं-दिल्ली) और आचार्य

महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार श्रीमती महावीर गोलेच्छा (बालोतरा-अहमदाबाद) को प्रदान किया गया। अभातेयुप के अध्यक्ष श्री विमल कटारिया ने पुरस्कार के विषय में अवगति दी। अभातेयुप उपाध्यक्ष श्री मुकेश गुलगुलिया और श्री पंकज डागा ने पृथक-पृथक प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। सहमंत्री श्री रमेश डागा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अभातेयुप के पदाधिकारियों आदि ने प्रशस्ति पत्र आदि प्रदान कर दोनों व्यक्तियों को पुरस्कृत किया। दोनों पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपने कृतज्ञ भावों को अभिव्यक्ति दी।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'आदमी को अपने जीवन में कुछ विशेष अच्छा करने का प्रयास करना चाहिए। वह अपनी शक्ति का विकास करे और उसका सदुपयोग भी करे, यह काम्य है। शक्ति का सदुपयोग करने वाला आदमी जीवन में आगे बढ़ सकता है। प्रतिभा होना जीवन की एक उपलब्धि होती है। हमारे जीवन में बौद्धिक विकास का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। दुबला-पतला आदमी भी अपने बौद्धिक बल के आधार पर अपना विकास कर सकता है और दूसरों को भी बहुत कुछ दे सकता है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा अभी दो पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। पुरस्कार प्राप्तकर्ता व्यक्ति इस पुरस्कार से प्रेरणा लेकर और आगे बढ़ने का, और ज्यादा आध्यात्मिक विकास करने का प्रयास करें तथा अपने जीवन में खूब प्रसन्नता व आत्मबल के साथ विशिष्ट, अच्छा, आध्यात्मिक कार्य करने का प्रयास करें, मंगलकामना।' पुरस्कार कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप के महामंत्री श्री संदीप कोठारी ने किया।

व्यक्ति नहीं, संगठन रहे प्रमुख

२६ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में अजीव तत्त्व की विवेचना करने के उपरान्त कहा--'आदमी का जीवन सापेक्ष है। कितनों की सहायता मिलती है, तब जीवन आगे बढ़ता है। खाने को रोटी और ओढ़ने को कपड़ा चाहिए। एक रोटी आदमी को खाने को मिलती है, उसमें कितनों का हाथ रहता है। उसी प्रकार एक कपड़ा पहनने को मिलता है, उसमें कितनों-कितनों का योगदान रहता है। चिकित्सा आदि के लिए कितनों का सहयोग लेना होता है। इस प्रकार सामूहिक जीवन में दूसरों का सहयोग अपेक्षित होता है।

परिवार अनेक व्यक्तियों का समूह होता है। पारिवारिक जीवन में स्वार्थ हावी नहीं होना चाहिए। बड़े हित के लिए छोटे हित का परित्याग कर देना चाहिए। एक संस्कृत श्लोक में बताया गया है कि कुल के हित के लिए व्यक्ति के हित को छोड़ देना चाहिए। गांव के हित के लिए कुल के हित और राष्ट्रहित के लिए गांव के हित को छोड़ देना चाहिए। जहां आत्महित का प्रसंग हो, वहां संसार को छोड़ देना चाहिए।

जहां कोई संस्था होती है, वहां संस्था मुख्य होती है, व्यक्ति गौण होना चाहिए। संगठन और संस्था का महत्त्व रहना चाहिए। वहां व्यक्ति का महत्त्व तो बहुत अल्प रहना चाहिए। जिस संगठन में ऐसी स्थिति बन जाती है कि उसके सदस्य अपने नेतृत्व के अधीन नहीं रहना चाहते, वह संगठन लड़खड़ा सकता है और कभी धराशायी भी हो सकता है। संगठन के सदस्यों में महत्त्वाकांक्षा नहीं, कार्याकांक्षा और सेवाकांक्षा रहनी चाहिए।'

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत चौथा दिन पर्यावरण शुद्धि दिवस के रूप में आयोजित हुआ। पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में उपस्थित जनमेदिनी को पावन प्रेरणा प्रदान की।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का ५२वां वार्षिक अधिवेशन

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में कल से अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का ५२वां वार्षिक अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में अधिवेशन के संदर्भ में उपक्रम समायोजित हुआ।

इस अवसर पर परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन उद्‌बोधन में कहा--'तेरापंथ समाज में अनेक संघीय संस्थाएं हैं। संघीय संस्थाओं में केन्द्रीय संस्थाएं भी हैं और अकेन्द्रीय संस्थाएं भी हैं। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद एक केन्द्रीय संस्था है। यह युवाओं और किशोरों का समुदाय है। युवक परिषद के साथ किशोर मंडल भी जुड़ा हुआ है। युवक परिषद जैसी संस्था हो जाने से कितने-कितने युवकों को एक साया मिल गया, एक आश्रय मिल गया। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के शासनकाल में इस संस्था का जन्म हुआ। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के शासनकाल में यह संस्था गतिमान रही और आज भी यह गतिमान है।

युवा अवस्था ऐसी होती है, जिसमें आदमी उत्पथ पर भी जा सकता है और सत्पथगामी भी बन सकता है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में अनेक आध्यात्मिक कार्यक्रम हो रहे हैं। युवक-किशोर उपवास करते हैं, यह बहुत अच्छी बात है। युवकों-किशोरों के द्वारा सामायिक का कार्य, बारहव्रत का प्रसार होता है, यह भी अच्छा है। वृद्ध लोग करते हैं, किन्तु युवक लोग भी सामायिक, तपस्या, बारहव्रत आदि करते हैं तो मानना चाहिए कि धर्म जगत का भविष्य उज्ज्वल है। आध्यात्मिक, धार्मिक कार्यों में विशेष रूप से इन वर्षों में युवकों में जो उत्साह दिखाई दे रहा है, वह काफी संतोषप्रद स्थिति है। इस प्रकार युवक परिषद द्वारा केवल सामाजिक कार्य ही नहीं, आध्यात्मिक गतिविधियां भी संचालित की जा रही हैं।

शादी, नामकरण आदि संस्कारों में कैसे सादगी, संयम बढ़ सके, जैनत्व मुखर हो सके, इस संदर्भ में भी अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद जैन संस्कार के माध्यम से जागरूक है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। कितने- कितने युवक देश में कहां-कहां फैले हुए हैं, कितनी युवक परिषदें हैं। उन परिषदों के माध्यम से इस युवाशक्ति को संगठित करने का प्रयास किया जा रहा है। युवकों में विनय भाव और कर्मठता देखने को मिलते हैं। युवा तो मानों कर्मठता का पर्याय होता है, होना चाहिए। उसके साथ विवेक भी रहे तो युवकत्व का शृंगार हो जाता है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के कितने-कितने कार्यकर्ता हैं, विभिन्न दायित्वों को संभालने वाले हैं। अपने-अपने क्षेत्रों में कार्य करने वाले हैं। युवकों और किशोरों में नशामुक्ति का अच्छा क्रम रहे। शादी हो या अन्य कोई अवसर या कोई मीटिंग आदि, शराब से अपने आपको विरत रखना चाहिए। गुटखा आदि से दूर रहने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में सादगी रहनी चाहिए। आज युवकों की वेशभूषा अनायास देखने में आई। यह सादगी की प्रतीक-सी लगी। वस्त्रों में ही नहीं, जीवन के अन्य कार्यों में भी सादगी रहनी चाहिए। अनपेक्षित दिखावा-प्रदर्शन न हो। युवापीढ़ी का जीवनक्रम अच्छा बना रहे, इससे आत्मा उन्नत बन सकती है और समाज को भी कुछ अवदान प्राप्त हो सकता है। युवक परिषद से जुड़े सभी व्यक्ति अच्छा कार्य करने का और प्रत्येक क्रिया के साथ संयम और विवेक रखने का प्रयास करें। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद का अधिवेशन खूब अच्छा रहे। अच्छी स्फुरणा होती रहे, अच्छा कार्य होता रहे, मंगलकामना।'

मुख्यमुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'तेरापंथ युवक परिषद एक संगठनात्मक संस्था है। इस संस्था में सैंकड़ों युवक अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं। युवा अवस्था में अपने समय को लगाना भी विशेष बात होती है, क्योंकि व्यक्ति के जीवन में युवावस्था एक ऐसी अवस्था होती है, जिसमें उसे परिवार को संभालना होता है और अपने व्यापार में भी समय देना होता है। इस दृष्टि से इस अवस्था में अपना समय धार्मिक कार्यों में नियोजित करना बहुत विशेष बात होती है। परम पूज्य आचार्यप्रवर के शासनकाल में युवापीढ़ी का धार्मिक रुझान बढ़ता ही जा रहा है। आचार्यप्रवर की सुदूर प्रांतों की प्रलम्ब यात्रा के दौरान सैंकड़ों-सैंकड़ों नए युवक संपर्क में आए हैं, आ रहे हैं। एक बार सम्पर्क में आने के बाद उनके भीतर इतनी श्रद्धा उमड़ती है कि वे युवक अपनी धर्म की चेतना को निरंतर जागृत करने का प्रयास करते हैं और उनमें धर्मसंघ को भी अपनी सेवा देने का उत्साह विशेष रूप से जागृत हो जाता है।

युवक परिषद के युवकों का सम्यक्‌ज्ञान पुष्ट हो, उनमें तत्त्वज्ञान के प्रति रुझान बढ़े और सत्संस्कार

प्रगाढ़ हो तो वे संघ को और अच्छे रूप में अपनी सेवा दे सकते हैं। किशोरों को भी अभी से संस्कारित बनाने का प्रयास उनके व्यक्तिगत जीवन और परिवार के लिए ही नहीं, धर्मसंघ के लिए भी हितकारी सिद्ध हो सकता है। युवाओं में चरित्र के प्रति दृढ़ निष्ठा रहे। उनके भीतर व्यसनमुक्ति के संस्कार इतने पुष्ट हों कि वे किसी भी स्थिति में व्यसनों से अपना बचाव कर सकें। युवापीढ़ी का विवेक भी जागृत होना चाहिए। युवक पद, नाम और फोटो की लालसा से मुक्त होकर कार्य करने की भावना रखें तो उनकी क्षमताओं का सही उपयोग हो सकता है।' मुख्यमुनिश्री ने 'अब जागो अरे वीरो! कमर कसकर उतरो' गीत का संगान किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री विमल कटारिया और महामंत्री श्री संदीप कोठारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अभातेयुप के कार्यकर्ताओं द्वारा गीत का संगान किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के त्रिदिवसीय वार्षिक अधिवेशन में करीब १८० शाखाओं के १०२३ युवक संभागी बने। 'यूथ कनेक्ट' थीम पर आधारित इस अधिवेशन के संभागियों को परम पूज्य आचार्यप्रवर ने पावन संबोध प्रदान किया। विभिन्न सत्रों में मुनि दिनेशकुमारजी, अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी, मुनि नयकुमारजी और मुनि ध्रुवकुमारजी ने भी प्रशिक्षण दिया। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री गौतम चोरड़िया का भी वक्तव्य हुआ।

अमृतवाणी का वार्षिक अधिवेशन

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज 'अमृतवाणी' का भी अधिवेशन समायोजित हुआ। पूज्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'आज अमृतवाणी का भी अधिवेशन है। सुखराजजी सेठिया आदि कार्यकर्ता उपस्थित हैं। अमृतवाणी वाणी के संग्रहण और उसे प्रसारित करने में अपना योगदान दे रही है। यह एक बहुत ही ऐतिहासिक और गरिमापूर्ण कार्य है। आज भी आचार्य तुलसी के प्रवचन सुने जा सकते हैं, देखे जा सकते हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी के भी कितने-कितने प्रवचन भी उपलब्ध हैं, सुलभ हैं। टेलीविजन के चैनल्स के माध्यम से कितने-कितने लोग लाभान्वित हो रहे होंगे। साक्षात् परिचय नहीं होते हुए भी टेलीविजन के माध्यम से सम्पर्क में है। इस संदर्भ में अमृतवाणी अपना योगदान दे रही है। यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है।

कितने-कितने कार्यकर्ता अमृतवाणी से जुड़े हुए हैं। हमारे साथ-साथ मानों अमृतवाणी भी चलती रहती है, सेवा का कार्य चलता रहता है। जो कार्यकर्ता आदि इससे जुड़े हुए हैं, बहुत अच्छे ढंग से कार्य करते रहें। जिन्हें भी मुख्यता का कार्य मिले, वे अपने उस दायित्व के अनुरूप आध्यात्मिक सेवा के कार्य को आगे बढ़ाते रहें, खूब अच्छा कार्य होता रहे।'

अमृतवाणी के अध्यक्ष श्री सुखराज सेठिया ने अपने द्विवर्षीय कार्यकाल की सम्पन्नता के संदर्भ में अपने कृतज्ञ भावों को अभिव्यक्ति दी।

श्री प्रकाश बैद (कोलकाता) अमृतवाणी के अध्यक्ष निर्वाचित

आज मध्याह्न में चेन्नई में अमृतवाणी की वार्षिक साधारण सभा आयोजित हुई, जिसमें अमृतवाणी के सन् २०१८-२० के कार्यकाल के लिए श्री प्रकाश बैद (लाडनूं-कोलकाता) को अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किया गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री बैद एवं निवर्तमान अध्यक्ष श्री सुखराज सेठिया ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। चुनाव प्रक्रिया में श्री लूणकरण छाजेड़ चुनाव अधिकारी के रूप में रहे।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष द्वारा मनोनीत पदाधिकारीगण इस प्रकार हैं--उपाध्यक्ष-श्री छगन जम्मड़ (दिल्ली), श्री ललित दुगड़ (चेन्नई), मंत्री--श्री अशोक पारख (सिलीगुड़ी), कोषाध्यक्ष--श्रीमती संगीता सेखानी (कोलकाता)।

श्रीमती मनोहरदेवी बाफना ने पूज्यप्रवर से २८ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

प्रेक्षाध्यान दिवस का समायोजन

३० सितम्बर। प्रेक्षाध्यान दिवस। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'सृष्टि के अनेक नियम हैं, व्यवस्थाएं हैं। सृष्टि के सारे नियमों को जान पाना वर्तमान में कठिन अथवा असंभव बात है। हमें ग्रंथों या आगम वाङ्मय में कुछ ऐसी व्यवस्थाएं मिलती हैं, जो सृष्टि की व्यवस्था को बताने वाली हैं। अनेक नियमों से एक निम है--

ऐसे अनंत पुद्गल हैं, जो आकाश के दो प्रदेशों में स्थित हैं। लोकाकाश समूचे आकाश रूपी महासागर में एक बूंद के समान हैं। अलोकाकाश अनंत है। आकाश अपने आप में अमूर्त होता है, किन्तु उसमें रहने वाले पुद्गल मूर्त हैं। आत्मा भी अपने आप में अमूर्त है। जो कर्म पुद्गल आत्मा से स्पृष्ट हैं, वे मूर्त हैं। अमूर्त आत्मा को देखना संभव नहीं, किन्तु आत्म साक्षात्कार की बात भी आती है।

कितने-कितने प्रेक्षाध्यान शिविर लग चुके हैं। प्रेक्षाध्यान में राग-द्वेष मुक्त होना, सम्यकूतया गहराई से देखना होता है। श्वास, शरीर, चैतन्यकेन्द्रों को राग-द्वेष से मुक्त रहकर देखना होता है। प्रेक्षाध्यान की अपनी विधा है। आजकल तो सीडी आदि के माध्यम से भी ध्यान का प्रयोग किया जा सकता है। उससे प्रशिक्षण का श्रम कम हो गया। अपेक्षानुसार प्रशिक्षक भी कुछ बता सकते हैं। सीडी आदि में किसी महान व्यक्तित्व की भाषा हो तो उसका अपना प्रभाव हो सकता है, एकरूपता रह सकती है, समय की नियमितता रह सकती है और सुव्यवस्था भी रह सकती है। इस प्रकार सीडी आदि की जो व्यवस्था काम में ली जाती है, वह एक सुन्दर और उपयुक्त व्यवस्था प्रतीत हो रही है।

प्रेक्षाध्यान में विभिन्न प्रयोग हैं। अर्हम् ध्वनि, कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा, समवृत्ति श्वास प्रेक्षा, लेश्या ध्यान, चैतन्यकेन्द्र प्रेक्षा, ज्योतिकेन्द्र प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा आदि-आदि कितने प्रयोग हैं। नमस्कार महामंत्र के आधार पर भी ध्यान करवाया जाता है। प्रेक्षाध्यान की संपूर्ण प्रक्रिया में आसन, प्राणायाम का भी समावेश किया गया है। स्वास्थ्य के संदर्भ में भी प्रेक्षायोग की उपयोगिता हो सकती है। भाव शुद्धि और आत्म कल्याण की दृष्टि से प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करना उत्तम बात है। राग-द्वेष मुक्ति की साधना प्रेक्षाध्यान की आत्मा है। जब तक राग-द्वेष से मुक्ति नहीं होगी, तब तक आत्मा से आत्मा का साक्षात्कार पूर्णतया होना कठिन या असंभव है।

प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में पांच सूत्र बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, वे इस प्रकार हैं--

१. भावक्रिया--हम जो भी कार्य करें, मन उसी में रहे अर्थात् वर्तमान में जीएं। आगम में 'उवउत्ते' शब्द प्राप्त होता है। वह भावक्रिया का प्रतीक शब्द प्रतीत हो रहा है। चलते समय चलने में ध्यान, खाते समय खाने में ध्यान--इस प्रकार प्रत्येक क्रिया में राग-द्वेष मुक्त रहकर एकाग्र रहने का प्रयास करना चाहिए।

२. प्रतिक्रिया विरति--कोई कुछ कह दे तो उसकी गलत रूप में प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। मन में प्रतिशोध की भावना नहीं रखनी चाहिए।

३. मैत्री--'मेत्ती मे सव्वभुएसु' सभी प्राणियों के साथ मेरा मैत्री का भाव रहे।

४. मिताहार--आहार में संयम रहना चाहिए।

५. मितभाषण--बोलने में भी संयम रहना चाहिए।

ये पांच सूत्र प्रेक्षाध्यान की मूल साधना के सहायक तत्त्व हैं। ये बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। हमें इन पांचों की भी साधना करनी चाहिए।

आज प्रेक्षाध्यान दिवस है। अध्यात्म जगत में ध्यान का भी महत्त्व हैं जैन वाङ्मय में ध्यान के चार प्रकार बताए गए हैं--आर्त्त, रौद्र, धर्म्य और शुक्ल। इनमें प्रथम दो अशुभ ध्यान और शेष दो शुभ ध्यान के प्रकार हैं। चौदहवें गुणस्थान का ध्यान तो परम ध्यान है। उस समय के ध्यान की तुलना में दूसरा कौन-सा ध्यान हो सकता है। वह तो सर्वाधिक उच्चकोटि का ध्यान होता है। उसमें संपूर्ण योग निरोध की स्थिति होती है।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

आचार्यप्रवर ने प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में समुपस्थित जनमेदिनी को ध्यान का प्रयोग करवाया। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अंतर्गत पांचवां दिन नशामुक्ति दिवस के रूप में निर्धारित था। पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में मंगल अभिप्रेरणा प्रदान की।

मुनि कुमारश्रमणजी ने प्रेक्षाध्यान दिवस के संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्य सन्निधि में नमस्कार महामंत्र का कोटि जप अनुष्ठान

परम पूज्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार अगस्त-सितम्बर माह में चेन्नई में नमस्कार महामंत्र के सपाद कोटि जप अनुष्ठान का उपक्रम रहा। इस अनुष्ठान में ६८१ व्यक्तियों के संभागी बनने तथा उनके द्वारा निश्चित कालावधि में कुल २,२५,००००० (सवा दो करोड़) बार नमस्कार महामंत्र के जप करने की सूचना प्राप्त हुई है। यह संख्या निर्धारित लक्ष्य से करीब एक करोड़ अधिक है। २४ अगस्त से २२ सितम्बर तक चले इस अनुष्ठान में एक संभागी व्यक्ति द्वारा एक दिन में अधिकतम तीन बार में ग्यारह माला फेरने की विधि निर्धारित की गई थी। इस अनुष्ठान के साथ पालनीय नियम इस प्रकार रहे--

- साधना काल में कुछ तप का प्रयोग, यथा-- एकासन अथवा उपवास अथवा प्रतिदिन ११ द्रव्य की सीमा (पानी, मंजन, दवाई के सिवाय)।
- नशामुक्ति-- शराब, धूम्रपान, गुटखा आदि का वर्जन।
- साधनाकाल में इन छह चीजों का वर्जन-- आलू, प्याज, लहसुन, गाजर, मूली, शकरकंद।
- रात्रि भोजन वर्जन (तिविहार अथवा चौविहार)
- ब्रह्मचर्य व्रत का पालन (संपूर्ण अनुष्ठान काल तक)

आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति ग्रन्थ : एक अनुरोध

तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का जन्म शताब्दी वर्ष अब सन्निकट है। इस उपलक्ष में जैन विश्व भारती द्वारा एक स्मृति ग्रन्थ का निर्माण किया जा रहा है। जैन विश्व भारती की ओर से चतुर्विध धर्मसंघ से यह अनुरोध किया गया है कि आचार्य महाप्रज्ञजी से संबंधित कोई आलेख/प्रेरक संस्मरण यथाशीघ्र प्रेषित करें। प्रकाशन का निर्णय संपादक-मंडल का रहेगा। आलेख और संस्मरण भेजने हेतु एवं अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र इस प्रकार हैं--जैन विश्व भारती, लाडनूं-३४१३०६ इमेल-mahaprajanasmriti@gmail.com (मोबाइल नं. ९५८९२२६९९६)

तीन संत गणमुक्त

सन् २०१८ के सितम्बर माह में मुनि जयंतकुमारजी (गंगाशहर), मुनि मेरुकुमारजी (गंगाशहर) तथा मुनि सौम्यकुमारजी (हिसार) जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की साधु संस्था से मुक्त हो गए हैं।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला